मनायें नव युग के लिए नवरात्रि

जैसे जैसे नवरात्रि का दिन आता, पैर थिरकने लगते हैं। श्री दुर्गा माँ के लिए भक्त व्रत तथा उपवास रखते हैं। साथ साथ कोई भी पाप कर्म न हो, उसकी परहेज रखते हैं। नौ दिन का ये लम्बा त्योहार बड़े धूम धाम से हर कोई मनाता है।

'पूर्व काल में देवताओं और असुरों में पूरे सौ वर्ष तक जो युद्ध हुआ, उसमें असुरों का स्वामी 'महिसासुर' देवताओं को हराकर इन्द्र बन बैठा। तब सभी देवताओं ने विष्णु और शिव जी को महिसासुर द्वारा पीड़ित होने का वृत्तांत सुनाया। विष्णु और शिव को क्रोध आया, उनकी भौहें चढ़ गईं और मुँह टेढ़ा हो गया। तब विष्णु के मुख से और ब्रह्मा, शंकर तथा इन्द्र आदि के शरीर से तेज निकला। वह सब मिलकर एक देवी का रूप हो गया। शंकर के तेज से उसका मुख, विष्णु के तेज से भुजायें और यमराज के तेज से उसके सिर के बाल और ब्रह्मा के तेज से उसके शरीर के अन्य भाग हुए। इन्हीं का नाम 'श्री लक्ष्मी' हुआ। उसी देवी को ही 'दुर्गा सप्तशती' में भद्रकाली और अम्बिका भी कहा गया है और दुर्गा भी। उस देवी महालक्ष्मी अथवा दुर्गा के चरणों से पृथ्वी दबती जा रही थी और धनुष की टंकार से पाताल क्षुब्ध होते जा रहे थे।'

- ब्र.कु. गंगाधर

आगे लिखा है कि असुरों की सेना कई अरब और रथ कई करोड़ थे। देवी ने उनसे युद्ध किया। रणभूमि में देवी के जितने श्वास निकले, वे सभी तत्काल ही सैकड़ों हज़ारों गणों योद्धाओं के रूप में प्रकट हो गये और अस्त्रों-शस्त्रों से वे भी असुरों से लड़ने लगे। देवी ने हुंकार की और एक असुर सेनापति मर गया। आखिर महिषासुर एक भैंस का रूप धारण कर आगे बढ़ा। उसकी श्वास के प्रचंड वायु के वेग से उड़े हुए सैकड़ों पर्वत खंड आकाश से गिरने लगे। लड़ते लड़ते भैंस का रूप छोड़कर उसने सिंह का रूप, फिर हाथी का रूप और अंत में फिर से भैंस का रूप धारण किया। वह तीनों लोकों में सबको व्याकुल करने लगा। ऐसे लड़ते हुए वह भैंस से आधा निकला ही था कि देवी ने उसे मार डाला। दुर्गा का प्रायः यही चित्र जिसमें महिषासुर भैंस से निकल रहा होता है और दुर्गा उसे मार रही होती है, नवरात्रि के अवसर पर अधिकतर भक्तों को प्रिय लगता है और उसी वृत्तांत की प्रायः मूर्तियां भी बनती हैं।

अब आप विचार कीजिए कि यह जो देवी के श्वास योद्धाओं का रूप धारण कर लेते, उसके 'हूं' कहने से ही एक असुर सेनापति की मृत्यु हो गई, महिषासुर के प्रचंड वायु के वेग से पर्वत के सैकड़ों टुकड़े उड़े, उसने भैंस, शेर, हाथी आदि का रूप धारण किया, देवी के पांव तले पृथ्वी दबी जा रही थी, सातों पाताल क्षुब्ध हो उठे, ये सब वाक्य अजूबे के सिवाय क्या महत्व रखते हैं। किन्चित यह भी सोचिए कि असुरों की ये कई अरब सेना और करोड़ रथ ठहरे कहाँ होंगे? स्पष्ट है कि ये सब बातें गलत, असत्य और अमान्य हैं।

दुर्गा सप्तशती में लिखा है कि पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरों ने जब इन्द्र से तीनों लोकों का राज्य छीन लिया था तो देवताओं ने हिमालय पर जाकर 'विष्णुमाया' की स्तुति की। उस समय पार्वती जी के शरी-केश से एक देवी प्रकट हुई, उसी देवी का नाम अम्बिका देवी हुआ। इस देवी ने 'हूं' किया तो असुरों की सेना का मुख्य असुर भस्म हो गया। यह हिमालय पर बैठी थी तो असुरों की सेना को आते देखकर देवी को क्रोध आया और इनका मुख काला पड़ गया और वहां से तुरंत विकराल मुखी 'काली' देवी प्रकट हुई। उसकी जीभ लपलपाने वाली थी। वो सबका भक्षण करने लगी। वे अंकुशधारी महावतों, योद्धाओं और घंटासहित कितने ही हाथियों तथा घोड़ों को एक ही हाथ से पकड़कर मुँह में डाल लेती और चबा डालती। इन्होंने बहुत असुरों को मार डाला।

अब ऊपर लिखे ये सारे वृत्तांत जो दिये हैं, ये बिल्कुल ही भ्रामक मालूम होते हैं। इसके बजाय यदि ये कहा गया होता कि 'वो देवी चीनी या खांड के बने हाथी, घोड़े और महावतों को खा जाती थी तो वह अच्छा होता।' चलो उससे मनोविनोद तो हो ही जाता और बात संभव तो मालूम होती।

ये सभी वृत्तांत के बारे में यदि देखें तो ये काल्पनिक व रूपक के रूप में ही दर्शाया गया है। अब आप ही विचार करें कि ऐसी देवी के श्वास से योद्धाएं तैयार हो सकते हैं? ब्रह्मा विष्णु शंकर के तेज से कोई देवी प्रकट हो सकती है? तो हम आपको यही बताना चाहते हैं कि आज के युग में बुद्धिशाली, शास्त्रज्ञानी विद्वान बहुत हैं, परंतु उन सबमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आंशिक रूप में है ही है। तो ये पाँचों विकारों का खात्मा करने के लिए ही परमात्मा की शक्ति की आवश्यकता पड़ती है और उसकी शक्ति की उपासना से ही शिव शक्तियां प्रकट होती हैं। जिसका नाम देवियों के रूप में जाना जाता है। उनमें भी दुर्गा को विशेष रूप से मानते हैं, क्योंकि दुर्गा माना दुर्गुणों को नाश करने वाली। तो इस नवरात्रि के शुभ अवसर पर आप भी अपने में न दिखने वाले असुर के रूप में जो ये विकार छिपे हैं, उनसे मुक्त होने के लिए व्रत करें और अपने जीवन में परमात्म शक्ति द्वारा देवत्व को धारण करने की शक्ति प्राप्त करें। तभी आपके जीवन में नवसंचार होगा और नवयुग आयेगा। इसी भावना से नवरात्रि उत्सव को यादगार रूप में मनाया जाता है। तो आइये हम सभी अपने में निहित बुराई रूपी महिषासुर को खत्म करें और देवत्व का आगाज़ करें।

परमात्मा का प्यार और परिवार का प्यार दुआयें देता है

बाबा ने मुरली में आशीर्वाद लेने की बात कही है, तो आशीर्वाद और दुआओं में क्या फर्क है? आशीर्वाद है बड़ों की, दुआयें हैं सबकी। मुझे तो अभी शान्ति की शक्ति चला रही है, परन्तु शक्ति है शान्त रहने की : चिंतन नहीं करना। मुझे चिंता या चिंतन करना नहीं आता है, तभी चल रही हूँ। कोई कल की बात याद नहीं, सुबह की भी बात अभी याद नहीं है। बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश...।

यह बहुत अच्छी बात है। जो बीती, आगे के लिए यह करूं न करूं... धीरज धर मनुआ... यह गीत बहुत अच्छा है। ड्रामा की नॉलेज धीरज देती है। बाप का प्यार शान्ति देता है और परिवार का प्यार दुआयें देता है। मैंने देखा है सारे विश्व भर के बहन भाई कितना प्यार करते हैं, दुआयें देते हैं। दुआओं भरा प्यार, ऐसे नहीं खुश करने के लिए प्यार करते हैं। मैंने एक का पत्र पढ़ा, पत्र में लिखा है, थोड़ा अपसेट होने कारण तबियत बताने डॉक्टर के पास गई तो डॉक्टर ने कहा, कुछ बीमारी नहीं है तुम्हें, कोई फीलिंग आई है। फीलिंग यह आई कि मुझे सरेण्डर नहीं समझते हैं, उसका दुःख हुआ था तो हॉस्पिटल में गई। तो मैं आपको राय देती हूँ कि कभी भी सदा खुश रहना, राज़ी रहना, स्वयं को सदा उमंग-उल्लास में रखना - यह है अपने ऊपर दया करना। कभी भी कुछ हो जाए, कैसे होगा, मेरे से नहीं होता है ना... नहीं। अगर मेरे पास उमंग-उल्लास है, सच्ची दिल है तो सेवा भाव है। भले सेवा की भावना होवे, लेकिन उमंग-उल्लास न होवे तो कदम आगे नहीं बढ़ेगा। कदम आगे बढ़ाना, कदम कदम पर कमाई है। पढ़ाई में कमाई है।

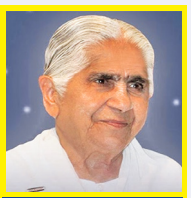
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

इस पढ़ाई से हमारी प्रारब्ध बहुत ऊँची है। तो हमारी सबसे ऊँची पढ़ाई कौन सी है? ड्रामा की गहरी नॉलेज, सेकेण्ड सेकेण्ड जो पास हुआ बहुत अच्छा, दूसरा जो होगा अच्छा होगा। तो सभी सदा खुश राज़ी हो? सचमुच खुश हैं, क्योंकि कोई बात में नाराज़ नहीं। किसी से भी नाराज़ नहीं।

अगर मन पूरा समर्पण नहीं है तो क्या है? धन मेरे पास थोड़ा रख दिया है, किसके लिए? काहे के लिए रखा है? बाबा ने ऐसे नहीं किया है। मुझे अन्त मते खाना बाबा के घर का मिलेगा। मैं दिल से कहती हूँ, यज्ञ में जब से समर्पण हुई हूँ, मैं गैरंटी से बोलती हूँ, प्रैक्टिकल बोलती हूँ, मेरे कपड़े और खाने पर भी खर्चा कम हुआ है, पर्सनल। यज्ञ में एकॉनमी से रहना। दिल में सच्चाई, कपड़ों की सफाई और सादगी सिम्पल है। अगर सफाई न हो, सदैव सादगी भी न हो तो सच्चाई काम कैसे करेगी। सच्चाई ऑटोमेटिक काम करती है, इसके मेरे पास कई प्रूफ हैं, क्योंकि हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तो क्या करेगा काज़ी। नियत साफ होगी तो सच्ची दिल है, साहेब राज़ी है इसके लिए मैं कहाँ भी रहूँ, कभी भी न्यूज़ समाचार आदि कुछ भी नहीं देखती हूँ, न सुनती हूँ। कभी देखा ही नहीं है, टी.वी. क्या होती है। क्योंकि कोई आत्मा ऐसी थी, जिसको मैंने कहा टी. वी. नहीं देखो तो कहा यह तो टी. बी. की बीमारी जैसी है वो कैसे जायेगी? क्या ज़रूरत है टी.वी. देखने की? बाबा कहता है बच्चों, बाबा दुआओं का भण्डार है, बाबा से दुआ ले लो।

विदेही, कर्मेन्द्रियों की आकर्षण से मुक्त

बाबा ने कहा है बच्चे लाइट हाउस बनो। तो लाइट हाउस का काम क्या होता है? चारो ओर रोशनी देना। इस समय दुनिया के आत्माओं की यही इच्छा है कि सदा सुखी रहें, सदा शान्त रहें। साधारण अशान्ति से शान्ति तो सब लोग समझते हैं, लेकिन हम लोगों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जो मन निगेटिव या व्यर्थ संकल्पों में भी नहीं जाये। इससे किनारा होगा तो हमारे बेस्ट, शुभ संकल्प होंगे। फिर उन समर्थ संकल्पों का वायब्रेशन स्वतः जाता है।

बाबा जब आते हैं तो वायब्रेशन्स अच्छे लगते हैं, क्यों? क्योंकि वह सागर है, ज्ञान का, सब शक्तियों का सागर है, उसका वायुमण्डल चारो ओर फैल जाता है। तो ऐसे हम सबको भी लाइट हाउस होकर वायुमण्डल फैलाना है। वह हद की रोशनी फैलाने वाला लाइट-हाउस तो कॉमन है। लेकिन हम हैं रुहानी लाइट हाउस। शक्ति, शान्ति और खुशी की लाइट देने वाले लाइट हाउस हैं। लेकिन रुहानी लाइट हाउस वही बन सकता है जिसमें सब शक्तियों का स्टॉक हो। अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पावरफुल होती है। तो इतनी शक्तियाँ जमा करके लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को परिवर्तन करना है। विश्व परिवर्तन की बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। तो बाबा ने यह जो ज़िम्मेवारी दी है, वह हमको अवश्य निभानी चाहिए। कई समझते हैं हम तो बहुत बिज़ी रहते हैं, इसलिए पावरफुल योग नहीं हो सकता है। विदेही बनना, अशरीरी बनना या कर्मातीत बनना- यह तो बहुत ऊँची मंज़िल है। इसके लिए अगर हम अभी से तैयारी करें तो लास्ट में हमको यह तैयारी मदद देगी। विदेही माना यह नहीं कि देह से एकदम न्यारे हो जायें, फिर तो शरीर छूट जायेगा। विदेही का अर्थ ही है कि कोई भी देह की कर्मेन्द्रियाँ हमको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करें। कई बार कोई कोई बात से कनेक्शन नहीं होता तो भी आदत होती है- देखेंगे, सुनेंगे...। तो यह समझो हमारी देखने की कर्मेन्द्रियाँ जो हैं, वह लूज़ हैं। वश में नहीं हैं क्योंकि देखेंगे तो सोच भी चलेगी कि कौन आया। देखने की आँख भी धोखा दे रही है और सोच भी चल रही है कि इस समय क्यों आया, कैसे आया तो हमारी कितनी शक्तियाँ व्यर्थ गईं! ऐसे हर एक में कोई न कोई नेचर होती है। कोई को सुनने की, कोई को देखने की इच्छा बहुत होगी। कोई को कोई मतलब नहीं होगा तो भी सोचने की आदत होगी। छोटी सी बात पर भी सोच बहुत चलेगा, यानि सोचने की शक्ति, मन पर कंट्रोल नहीं है और किसकी फिर बोलने की आदत होती। दो की बात चल रही होगी, वह वहाँ भी ज़रूर बीच में बोलेगा। रह नहीं सकेगा। कोई कनेक्शन नहीं है, फिर भी वह बोलेगा ज़रूर। कोई ना कोई विशेष कर्मेन्द्रियाँ जो होती हैं वह खींचती हैं, तो हर एक को अपनी चेकिंग करनी चाहिए कि बहुत करके कौनसी कर्मेन्द्रियाँ मेरे कंट्रोल में नहीं हैं, वही अंत में धोखा देंगी, क्योंकि अंत में सभी बातें दखने, सुनने, सोचने की होंगी। बोलने के लिए तो उस समय, समय नहीं होगा, लेकिन अंदर बोलेंगे ज़रूर। तो विदेही तब बन सकेंगे जब यह सब कर्मेन्द्रियाँ मेरे कंट्रोल में हों। इस देह की कर्मेन्द्रियाँ मेरे को क्यों खींचती हैं? क्योंकि कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है तो फिर विदेही कैसे बनेंगे? देह से न्यारा माना देह से कोई अलग तो नहीं हो जायेंगे। लेकिन कोई भी देह की कर्मेन्द्रियाँ हमको अपनी तरफ खींचे नहीं, यह प्रैक्टिस ज़रूर चाहिए। नहीं तो अंत में जब हालतें बहुत खराब होंगी, उस समय कंट्रोलिंग पावर अगर नहीं होगी तो कभी भी पास विद ऑनर नहीं हो सकते हैं।

दादी हृदयमोहिनी,
अति. मुख्य प्रशासिका

परिस्थिति में समान और सहनशील बनो

बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते कि बच्चे इस ज्ञान की मंज़िल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण वा शक्ति है?

बाबा ने कहा बच्चे दुःख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है। ज्ञानी तू आत्मा का गुण है समान रहना।

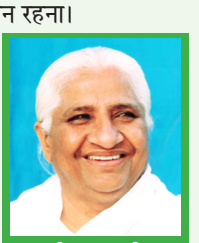
दादी प्रकाशमणि,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं, तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा कहते माना हमारे अंदर ड्रामा की सारी नॉलेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो की स्टेजेज़ की भी नॉलेज है। जब नॉलेज है तो नॉलेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वतः ही आ जाती है।

जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर तूने बाल से युवा वा युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परंतु जानते हैं कि यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुयें होना, यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है, तो हम क्यों कहें, ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में वा गर्मी में दुःख क्यों देती। हम जानते हैं कि यह नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज़ करें। हम जान गये अभी कि प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। अभी तमोप्रधान है इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। कभी भी हम ऐसे नहीं लड़ते - ऐ सर्दी तू मुझे दुःख क्यों देती? किससे लड़ेंगे? जब बुद्धि में आता यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ने नहीं जाते। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं। वह तो आयेंगी ही। मैं उससे दुःखी क्यों हूँ? जैसे प्रकृति का दुःख सुख सहन करते, वैसे इस परिवार का भी तो हिसाब किताब है। मैं उसमें क्यों लडूं। हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है। कभी कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दुःख देती तो गुस्सा क्यों नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती, लेकिन मैं सोचूं कि मैंने उसे कितना मान दिया है! एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूं या लेवता बनूं? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते, यह सवाल हरेक अपने से पूछे।